ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(5): 133-136
www.allresearchjournal.com
Received: 07-03-2022
Accepted: 28-04-2022

डॉ. जितेंद्र व्यास
विद्यावाचस्पति, संस्कृत विभाग, फैकल्टी ऑफ एस्ट्रोलॉजी, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. जितेंद्र व्यास
विद्यावाचस्पति, संस्कृत विभाग, फैकल्टी ऑफ एस्ट्रोलॉजी, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत

जल विज्ञान व वनस्पति विज्ञानः प्राकृतिक ससांधन शास्त्र की ज्योतिषीय प्रासंगिकता

डॉ. जितेंद्र व्यास

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2022.v8.i5b.9738

प्रस्तावना

1. वनस्पति शास्त्र का लक्षण व विषय

सभी प्रकार के जंगली वृक्ष लताएं पुष्प वनौषधि एवं यज्ञीय वनस्पति जगत् का विषय है। मनुस्मृति के अनुसार जिनके पुष्प नहीं लगते किन्तु फल लगते हैं उन्हें वनस्पति कहते हैं जेसे पीपल और बिल्ववृक्ष।[1]

आयुर्वेद ग्रन्थ भावप्रकाश के अनुसार नन्दीवृक्ष, अश्वत्था प्ररोह, गजपादप, स्थालीवृक्ष, क्षयतरू और क्षीरीवृक्ष वनस्पति की श्रेणी में आते है[2] परन्तु मेदनी कोष के अनुसार पृथ्वी पर उत्पन्न वृक्षमात्र वनस्पति की श्रेणी में आते हैं।[3] पृथ्वी पर उत्पन्न वृक्षमात्र फूल पौधे व पत्ती व फल की उत्पत्ति विकास व लय का ज्ञान पौधो लताओं व धान्यों के बीज, उनके गुण धर्म उत्पत्ति के साधन एवं मौसम का ज्ञान वनस्पति शास्त्र का विषय हैं।

1. **बगीचे की सार्थकता हेतु भूमि का शोधनः-** वृक्षायुर्वेदाध्याय के प्रारम्भ में ही वराहमिहिर कहते हैं कि वापी कूप तालाब आदि जलाशयों के किनारे पर बगीचा लगाना चाहिए क्योंकि जलयुक्त स्थल यदि छायारहित हो तो शोभा नहीं पाता। बगीचे की स्थापना हेतु कोमल भूमि अच्छी होती है जिस भूमि में बगीचा (बहुत सारे वृक्ष) लगाना हो उसमें पहले तिल बोंवें जब वे तिल फूल जायें तब उनको उसी भूमि में मर्दन कर दे। यह भूमि का प्रथम संस्कार हैं।[4]
2. **बगीचे में लगाने योग्य वृक्षः-** सबसे पहले बगीचे में या घर के समीप चाहर दिवारी में अशोक, पुन्नाग, शिरीष, प्रियंगु (कुकुनी) के वृक्ष लगाने चाहिए। इससे शुभ होता है, वराहमिहिर के अनुसार ये सभी अरिष्टनाशक एवं मंगल फलदायक वृक्ष हैं।[5]
3. **वृक्ष रोपण की ऋतुः-** विभिन्न प्रकार के वृक्षों को लगाने के काल व ऋतु का निर्धारण करते हुये वराममिहिर कहते हैं कि अजातशाखा अर्थात् कलमी से भिन्न वृक्षों को शिशिर ऋतु (माघ-फाल्गुण) में कलमी वृक्षों को वर्षा ऋतु (श्रावण-भाद्रपद) में लगावें।[6]
4. **वृक्ष रोपण के नक्षत्रः-** वराहमिहिर कहते हैं कि तीनों उत्तरा (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषढा, उत्तराभाद्रपद), रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, मूल, विशाखा, पुष्य, श्रवण, अश्विनी और हस्त ये नक्षत्र दिव्यदृष्टि वाले मुनियों ने वृक्ष रोपने के लिये श्रेष्ट कहे हैं।[7]
5. **वृक्ष रोपने के नियम एवं विधिः-** वराहमिहिर वृक्षारोपण को एक पवित्र कार्य मानते हैं इसलिये वे कहते हैं कि वृक्ष लगाने के पहले व्यक्ति स्नान करके पवित्र होकर चन्दन आदि से वृक्ष की पूजा करे फिर उसे स्थान से दूसरे स्थान पर लगावें। एक स्थान से वृक्ष को दूसरे स्थान पर ले जाने के पूर्व घृत, घ्वस, तिल, शहद, वायविडंग, दूध, गोबर इन सबको पीसकर मूल (जड) से लेकर अग्र पर्यन्त लग जाता है अर्थातृ वृक्ष सुखता नहीं।[8]
6. **वृक्ष सींचने का प्रकार एवं क्रमः-** वराहमिहिर कहते हैं कि लगाये हुये वृक्षों को ग्रीष्म-ऋतु में सुबह शाम एवं शीत ऋतु में एक दिन के बाद एक दिन छोङ कर वृक्षों में जल सीचंना चाहिए। वर्षा ऋतु में भूमि सूखने पर ही वृक्षों को जल देना चाहिए।[9]

   अधिक जल वाले वृक्षों को लगाने के उपक्रम की जानकारी देते हुये वराहमिहिर कहते हैं कि जामुन, वेत, वानीर, कदम्ब, गूजर, अर्जुन, बिजौरा, दाख, बडहर, दाडिम, पन्जुल, मक्तमाल (करंज), तिलक, करहल, तिमिर, अटबाज ये सोलह प्रकार के वृक्ष जलप्रद (अधिक जल वाले देश) भूमि पर लगाने चाहिए।[10]

   वृक्ष लगाने के क्रम का विवरण देते हुये वराममिहिर बताते हैं कि एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष के बीच बीस हाथ अन्तर होना चाहिए, सोलह हाथ का अन्तर मध्यम और बारह हाथ का हो तो अधम, यदि दोनों परस्पर स्पर्श करेंगे और दोनों की जडें इक्कठी होगीं तो ऐसे में सभी वृक्ष पीडित होतें हैं तथा अच्छी तरह फल नहीं देते।[11]

7. **वृक्षों से धन प्राप्ति का परिज्ञानः-** वराहमिहिर धन प्राप्ति के उपलक्ष्य को ध्यान में रखते हुये वृक्षायुर्वेदाध्याय में कहते हैं कि जहां काँटे वाले वृक्षों में एक बिना काँटे वाला हो अथवा बिना काँटे वाले वृक्षों के मध्य एक काँटे वाला वृक्ष हो तो उस वृक्ष से तीन हाथ पश्चिम दिशा में एक तिहाई युत तीन पुरूष (360 अंगुल) नीचे जल या धन होता हैं।[12]
8. **कलमी वृक्ष लगाने का विधानः-** कलम लगाने के प्रकार व विधि को बतलाते हुये वराहमिहिर ने कहा कि कटहर, अशोक, केला, जामुल, बडहर, दामिडम, दाख, पालवत, बिजौरा, अतिमुक्तक इन वृक्षों की शाखाओं को लेकर गोबर में लीप कर कटे हुये विजातीय वृक्ष की मूल या शाखा पर लगाकर जोड दें। वहां नया वृक्ष उत्पन्न हो जायेगा। यही कलम लगाने का विधान हैं।[13]
9. **एक दिन में फलयुक्त पोधा लगानाः-** वराहमिहिर ने वृक्षायुर्वेदाध्याय में चमत्कारी वृक्ष प्रकरण पर भी प्रकार डाला है उनका कहना है कि लसोडे के बीज को अंकोल फल के भीतर के जल से भावना देकर छाया में सुखा दें। यह प्रक्रिया कुल सात बार करें फिर उस बीज को भैंस के गोबर से घिसकर भैंस के सुखे गोबर के ढेर पर रख दें पत्पश्चात् ओलों से भीगी हुई मिटटी में उन बीजो को बोवें तो एक दिन में फलयुक्त पौधा लग जायेगा।[14]

   इतना ही नही वराहमिहिर ने तत्काल पौधा उत्पन्न करने की विधि बताते हुये कहा है कि अंकोल वृक्ष के फल के कल्क (सार) या तेल से अथवा श्लेष्मातक (लसोडे) के फल के कल्क या तेल से सौ बार भावना देकर ओलो से भीगी हुई मिट्टी में जिस बीज को बोवें वह उसी क्षण पैदा हो जाता हैं तथा उसकी शाखा फलो के भार से झुक जाती हैं बुद्धिमान् लोगों को इस पर आश्चर्य नही करना चाहिऐ।[15]
10. **वृक्षों में रोगोत्पत्ति के कारण व उनकी चिकित्साः-** इस सन्दर्भ में वराहमिहिर कहते हैं कि अधिक शीत, वायु, और अधिक धूप लगने से वृक्षों को रोग हो जाता है। रोगी वृक्षों के पत्तों पीले पड़ जाते है। अंकुर नहीं बढते, डालियाँ सूख जाती है और रस टपकने लगता है। वराहमिहिर लिखते हैं कि इन रोगी वृक्षों की चिकित्सा करनी चाहिये। पहले वृक्ष का जो अंग पूर्वोक्त विकार से युत हो, उसको शस्त्र से काट डालें, फिर वाय विडंग और पंक (कीचड) को निलाकर वृक्षों में लेप करे, बाद में दूध मिश्रित जल से सींचे तो वृक्ष रोग मुक्त हो जायेगा।[16]

    वृक्ष पर यदि फल न लगे या फल लगकर नष्ट हो जावे, तो कुलथी, उड़द, मूंग, तिल, जौ इन सब को दूध में डालकर औटावें, फिर उस दूध को ठंडा करके, उससे वृक्ष में सीधें तो निश्चय ही उस वृक्ष के फूलों में वृद्धि होगी।[17]

    भेड़ और बकरी की मेंगन (भेड़ारी) का चूर्ण दो आठक, तिल एक आठक, सत्तू (सतुआ) एक प्रस्थ, जल एक द्रोण, गौ-मांस एक तुला इन सबको मिला कर एक पात्र में सात दिन तक रखे और तत्पश्चात् उसमे वृक्ष गुल्म व तलाओं का सींचे, निश्चय ही फल-फूल की वृद्धि होंगी।[18]

    यदि किसी वृक्ष पर पुष्प कठिनाई से लगाते हो तो उस वृक्ष के बीज को घृत लगाये हुये से चुपड़ कर दूध में डाल दें। इस तरह दस रोज तक करता रहे बाद में उस बीज को गोबर में अनेक बार मलकर छाया मे सुखा दें। सूखने पर सूअर और हिरण के मांस का धूप देवें। उस बीज को तिल बोकर शुद्ध-सस्कारित की हुई जमीन पर लगावें एवं दूध मिश्रित जल से सीचें तो पुष्प युत वृक्ष उत्पन्न होगा।[19] इसके साथ ही इमली के वृक्ष, कपित्थ के वृक्ष एवं अन्य अनेक प्रकार के वृक्षों को लगाने की विधि इस अध्याय में भली-भांति समझाई गई है।

2. जल विज्ञान का लक्षण व स्वरूप

अमरकोष के अनुसार आप अम्भ, वारि, तोय, सलिल, जल, अमृत, जीवन, पय, पानी, उदक इत्यादि जल के ही पर्यायवाची शब्द है।[20] वराहमिहिर ने जल विज्ञान को उदकार्गल कहा हैं। उदक जल को कहते हैं अर्गला जल के उपर आई हुई रूकावट किया किंवा बाधा कहते हैं। वराहमिहिर के ही शब्दों में जिस विद्या से भूमिगत जल का ज्ञान होता है उस धर्म और यश को देने वाले ज्ञान को उदकार्गल कहते हैं।[21]

यथा - धर्म्यं यशस्यं च वदाम्यतोअहं दकार्गल येन जलोपलब्धिः।
पुंसां यश्चांगेषु शिरास्तथैव क्षितावपि प्रोन्नतनिम्न्संस्थाः।।

जिस तरह मनुष्यों के अंग में नाडियाँ है उसी तरह भूमि में ऊँची नीची जल की शिरायें (धाराएं) बहती हैं। आकाश से केवल एक स्वाद वाला जल पृथ्वी पर गिरता है। किन्तु वही जल पृथ्वी की विशेषता से तत्तत्स्थान में अनेक प्रकार के रस और स्वाद वाला हो जाता हैं। भूमि के वर्ण और रस के समान, जल का रस और वर्ण और रस व स्वाद का परीक्षण करना चाहिये।

इस पृथ्वी मण्डल पर 29 प्रतिशत भूमि और 71 प्रतिशत जल हैं। वैज्ञानिक कहते हैं कि मनुष्य के शरीर में भी इसी अनुपात में जल है जल का एक नाम जीवन है। वैज्ञानिकों का कहना है कि जीवन का प्रारम्भ जल से हुआ हैं।[22] जल की आवश्यकता मनुष्य को नित्य प्रति पड़ती है उसके बिना उसका जीवन नहीं चल सकता। फलतः मानव सभ्यता का विकास नदियों के तट पर हुआ। नदी के तट से कुछ दूर हटकर मनुष्य ने बालू खोदी तो थोड़ी सी गइराई में जल निकल आया। मनुष्य ने अपने ज्ञान व अनुभव के आधार पर पानी की प्राप्ति के लिये अपने सुविधाजनक स्थानों पर गड्ढे खोदने शुरू किये, फलस्वरूप 'कुओं की संस्कृति' का विकास हुआ।[23]

1. **भूतल के वृक्षों से जल की स्थितिः-** वराहमिहिर कहते है। कि जिस वृक्ष की एक शाखा नीचे की ओर झुकी हो और पीली पड़ गई हो, तो उस शाखा के नीचे तीन पुरूष (360 अंगुल) खोदने पर जल मिलता है।[24] जहां पर स्निग्ध, छिद्र रहित पत्तों से युक्त, वृक्ष, गुल्म या लता हो वहाँ तीन पुरूष (360 अंगुल) नीचे जल होता है। यह नियम काश, नलिका, नल, खजूर, जामून, अर्जून, बेंत एवं दूध वाले सभी वृक्ष-लताओं पर लागू होता है।[25]
2. **फल-पुष्पों से जल की स्थितिः-** वराहमिहिर के अनुसार जिस वृक्ष के फल-पुष्पों में विकार, पैदा हो, उस वृक्ष से तीन हाथ पर, पूर्व दिशा में चार पुरूष (480 अंगुल) नीचे जल की शिरा (धारा) मिलती है तथा नीचे पत्थर और पीली भूमि मिलती है।[26]

   जहाँ काँटों से रहित सफेद पुष्पों से युक्त कटेरी का वृक्ष दिखाई दे उस वृक्ष के नीचे साढ़े तीन पुरुष (420 अंगुल) नीचे खोदने से जल निकलता है।[27] इस अध्याय में वराहमिहिर ने शमी, दरिद्र, कपित्थ, कंजक, महुए, जामुन, खजूर, गूलर, बिल्ववृक्ष, बेर, वट, अर्जुन इत्यादि कुल 86 प्रकार के वृक्षों के नीचे जल धाराओं की खोज पर शोधपूर्ण सामग्री प्रस्तुत की है।
3. **धान्य से जल की स्थितिः-** वराहमिहिर अपने अनुभवों को सूत्र रूप में बतलाते हुये कहते हैं कि जिस खेत में धान्य उत्पन्न होकर नष्ट हो जाय, बहुत निर्मल धान्य हो, अथवा उत्पन्न होकर पीला पड़ जाय, वहाँ दो पुरुष (240 अंगुल) नीचे जल बहने वाली शिरा (धारा) होती है।[28]

यथा - यस्मिन् क्षैत्रोदेशे जातं सस्यं विनाशमुपयाति ।
स्निग्धमतिपाण्डुरं वा महाशिरा नरयुगे तत्र ।।

4. **वाष्प और धूम से जल ज्ञानः-** वराहमिहिर कहते हैं कि जिस स्थान से भाप या धूंआ निकलता हुआ दिखाई दे, वहाँ दो पुरुष (240 अंगुल) नीचे बहुत जल छोड़ने वाली शिरा (धारा) बहती है।[29]
5. **वल्मीक से जल की स्थितिः-** बहुत से लोग वल्मीक (उदाई) को निरर्थक समझ कर छोड़ देते हैं, परन्तु वराहमिहिर ने इस पर सूक्ष्म अन्वेषण किया और समझाया कि यदि वल्मीक के ऊपर दूब या सफेद कुशा दिखलाई दे तो वल्मीक के नीचे कूप खोदने पर इक्कीस पुरुष (2420 अंगुल) नीचे जल का स्त्रोत मिलेगा।[30]

यथा - वल्मीकसंवृत्तो यदि तालो व भवति नारिकेरो वा।
पश्चात् षड्भिर्हस्तैर्नरैश्चतुर्भिः शिरा याम्या ।।

जिस भूमि में कदम्ब और वल्मीक के ऊपर दूब दिखाई दे यहाँ कदम्ब वृक्ष से दक्षिण दो हाथ पर पच्चीस पुरुष (3000 अंगुल) नीचे जल मिलेगा।[31]
तीन वल्मीक के मध्य निजातीय तीन तरह के वृक्षों से युक्त लाल करंज का वृक्ष हो तो उस लाल करंज के वृक्ष से उत्तर दिशा में चार हाथ, सोलह अंगुल पर चालीस पुरुष नीचे खोदने से पत्थर निकलेगा। उस पत्थर के नीचे जल शिरा (धारा) मिलेगी।[32]

6. **दो वृक्षों के संयोग से जल की स्थितिः-** वराहमिहिर ने दो वृक्षों के संयोग से बनी जल-स्थिति पर भी विशेष रूप से विचार किया है। वे कहते हैं कि यदि बेर व लाल करंज ये दोनों वृक्ष इकट्ठे हो तो उनके तीन हाथ पश्चिम दिशा में सोलह पुरुष नीचे जल होता है और मीठा होता है। इसी प्रकार करील और बेर में अठारह पुरुष नीचे, पीलु और बेर में बीस पुरुष नीचे, अर्जुन और करीर में पच्चीस पुरुष नीचे जल मिलेगा।[33]
7. **केवल भूमि लक्षण से जल परिज्ञानः-** ऐसा नहीं है कि केवल वृक्ष-लताओं की स्थिति से ही भूमिगत जल का पता चलता है, अपितु वराहमिहिर ने मात्र भूमि परीक्षण से भूगर्भ जल की स्थिति का पता लगाने हेतु कुछ अमूल्य सूत्र उद्घाटित किये हैं। वराहमिहिर कहते हैं कि जहाँ सब जगह गरम और एक जगह ठण्डी भूमि दिखलाई दे अथवा जहाँ सब जगह ठण्डी और एक जगह गरम भूमि प्रतिभासित हो तो, उस जगह से साढ़े तीन पुरुष (420 अंगुल) नीचे जल होता है।[34] जिस भूमि पर पांव रखने से वह दब जाय और बिना रहने के स्थान के बहुत कीड़े हो, उस भूमि के डेढ़ पुरुष (180 अंगुल) नीचे जल का स्त्रोत होता है।[35] जहाँ पांव ताडन करने से गंभीर शब्द सुनाई पड़े, उस भूमि से साढ़े तीन पुरुष (420 अंगुल) पर जल और उत्तर में शिरा (जल धारा) होती है।[36]
8. **कूप खोदने के मुहूर्तः-** जब जलयुक्त भूमि की शोध हो जाय तो कूपारम्भ के मुहूर्त की आवश्यकता होती है। वराहमिहिर कहते हैं कि हस्त, मघा, अनुराधा, पुष्य, धनिष्ठा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, शतभिषा इन नक्षत्रों में कुआं खोदना शुभ होता है। इसके आगे की विध बतलाते हुए वराहमिहिर कहते हैं कि इस अवसर पर वरुण को बलि देकर गन्ध, पुष्प, धूप आदि से बड़ या बेतस की लकड़ी की कील की पूजा करके पहले शिरा स्थान में उसको गाड़ें बाद में खनन प्रारम्भ करें।[37]
9. **जल शुद्धि का विधानः-** कुएं का पानी यदि गन्दला, कड़आ, खारा, बेस्वादा या दुर्गन्ध वाला हो तो अंजन, मोथा, खस, राजकोशातक, आँवला, कतक का फल, इन सबका चूर्ण कूप में डालें, इन औषधियों के प्रभाव से जल निर्मल, मधुर, सुन्दर सुगन्ध वाला और गुणों से युक्त हो जाता है।[38]
10. **अवरोधक शिला तोड़ने की युक्तिः-** कुआं खोदते समय यदि खनन काल में बड़ी शिला, हठीला पत्थर या चट्टान आ जावे तो वराहमिहिर ने शिला विदारण की विधि चार प्रकार से बताई है।

1. शिला खण्ड के ऊपर ढाक और तेन्दु की लकड़ी जलाकर आग के समान लाल बना ले फिर ऊपर चूने की कली से मिश्रित जल छिड़के तो शिला फूट जाती है।
2. मोक्षक (काली पाठरि) वृक्ष की लकड़ी का भस्म मिलाकर जल को औटावें फिर उसमें शर के वृक्ष का भस्म मिलावें। बाद में अग्नि से तपाई हुई शिला पर उसे साल बार छिड़कने से शिला टूट जाती है।
3. छाछ, कांजी, मद्य, कुलथी इन सबको मिलाकर एक बर्तन में साता राज तक छोड़ दें, बाद में अग्नि से तपाई हुई शिला पर उसे बारम्बार छिड़कने से हठीली शिक्षा भी टूट जाती है।
4. नींव के पत्ते, नींब की छाल, तिलों की नाल, अपामार्ग, तेन्दू का फल, गिलोय इन सब की भस्म को गोमूत्र में मिलाकर तपाई हुई शिला पर छः बार छिड़कने से कठोर चट्टान भी टूट जाती है।[39]

11. **कूप निर्माण में दिशा विचारः-** वराहमिहिर ने कूप निर्माण में दिशा विचार पर वास्तुशास्त्रानुकूल विचार किया है उन्होंने बतलाया है कि यदि गाँव या नगर के आग्नेय कोण (दक्षिण-पूर्व) में कुआं होगा तो अग्निभय उत्पन्न करता है जिससे जन हानि होती है। अधिकतर आग लगती है और मनुष्य भी जल कर मरते है। नैऋत्य कोण में कूप हो तो बालकों का क्षय और वायव्य कोण में कूप स्त्रियों को भय देता है।[40]

आधुनिक वास्तुशास्त्री भी इस बात का समर्थन करते हैं कि कुआँ, बोरिंग (ट्यूबवेल), पानी की टंकी, जल संग्रह का स्थान कभी भी अग्निकोण, नैऋत्य एवं वायव्य में नहीं होना चाहिए।[41] कुछ विद्वानों ने तो अग्निकोण में जलसंग्रह (कुआं) निर्माण को पुत्र मृत्यु का कारण माना है तथा जलसंग्रह के स्थान को ईशान्य (उत्तर-पूर्व) में शुभ माना है। पश्चिम में सम्पति दायक माना, परन्तु घरों के बीचों बीच मध्यस्थान में जल संग्रह को धन-ऐश्वर्य के नाश का कारण माना है।[42]

3. निष्कर्ष

इन वृक्षों की जानकारी एक कुशल वैद्य तो क्या एक वनस्पति शास्त्रज्ञ को नहीं हो सकती। इनमें से कई प्राचीन वृक्षों के नाम आज भी वनस्पति शास्त्रज्ञें के लिये समस्या बने हुये है। वराहमिहिर ने इन वृक्षों को उत्पन्न करने की विधि, इन वृक्षों के उपयोग व प्रयोग करने की विधि भी बतलाई है। निश्चय ही यह विषय ज्योतिष एवं वैद्यक-शास्त्र से हटकर हैं।
एक वैद्य को वनस्पतियों लताओ व औषद्य-वृक्षों का ज्ञान रहता हैं। एक ज्योतिषी को नक्षत्र वृक्षों व धार्मिक वृक्षों का ज्ञान रहता है एक कुशल कर्मकाण्डी पुरोहित को यज्ञीय वृक्षों व समिधाओं का ज्ञान रहता है परन्तु वराहमिहिर ज्ञान के सन्दर्भ में वराहमिहिर ने वृक्षायुर्वेदाध्याय में सारस्वत नाम विद्वान् का बार बार उल्लेख किया है इसके अतिरिक्त किसी अन्य पूर्वाचार्य का नाम नही मिलता है। सारस्वत किस विषय के विद्वान् थें? कब हुये ज्ञात नही हो पाया फलतः ये महापुरूष भी कालातीत ही प्रतीत होते हैं। न केवल वृक्ष के ऊपरी सतह पर खिले फल फुल पुष्प पते व शाखाओं के बारे में अपितु वहरामिहिर को वृक्ष के भीतर उसकी जडो के नीचे की वस्तु स्थिति का भी ज्ञान था अमुक वृक्ष को खोदने पर कितने हाथ नीचे क्या समस्या मिलेगी? वराहमिहिर ने इसका सम्पूर्ण वर्णन इन अध्यायों में किया। इससे यह सहज ही प्रतीत हो जाता हैं कि वराहमिहिर का व्यावहारिक परीक्षण कितना विलक्षण एवं श्रमजन्य था। एक व्यक्ति की सम्पूर्ण आयु इस प्रकार के परीक्षण एवं सर्वेक्षण में ही व्यतीत हो जाय तो भी वह इतनी दृढता (निश्चितता) से नहीं कह सकता कि अमुक वृक्ष के इतने हाथ छोडकर अमुक दूरी तक खुदाई करने पर इस प्रकार की सामग्री मिलेगी। वराहमिहिर की धारणा शक्ति तेज थी उसके अनुभवजन्य ज्ञान का आधार टोस था। वह यह जानते थे कि वृक्षों को किस कारण किस प्रकार के रोग हो सकते हैं और उन रोगों की चिकित्सा क्या है? यह बात बहुत कम लोग ही जानते हैं कि आज के वैज्ञानिक युग की देन समझें जाने वाले वर्णसंकर पौधे का प्रचलन एवं विजातीय कलमों की स्थापना वराहमिहिर के काल में हो चुकी थी। वनस्पति शास्त्र के प्रबुद्ध ज्ञाता के रूप में वराहमिहिर युगों तक याद किये जात रहेंगें।
पानी की खोज एवं जलविज्ञान को लेकर जो सामग्री वराहमिहिर ने प्रबुद्ध पाठकों के लिये प्रस्तुत की है, सम्भवतः इसके पूर्व किसी ज्योतिषाचार्य ने ऐसी चेष्टा नहीं की। किसी खगोल शास्त्री, भूगोल शास्त्री, पर्यावरणविद् का ध्यान इस ओर नहीं गया। वराहमिहिर के पूर्ववर्ती उपलब्ध व अनुपलब्ध साहित्य में इस विषय के चिन्तन का नितान्त अभाव दिखलाई देता है। बराहमिहिर ने उदकागर्लाध्याय में सारस्वत एवं मनु आदि पूर्वाचार्यों का उल्लेख अवश्य किया है, परन्तु इन दोनों विद्वानों का जलविज्ञान पर कोई साहित्य कहीं दिखलाई नहीं पड़ता है। परन्तु इतना निश्चित है कि बृहत्संहिता में परम्परा से सैकड़ों-हजारों वर्षों से प्राप्त अनुभव का सार दिया गया है।
भूमि के नीचे जल प्राप्ति के विन्हों में वल्मीक (बांबी) का कई जगह बराहमिहिर ने उल्लेख किया है। वल्मीक दीमक से बनती है। दीमक नमी पसन्द करता है, इसलिये बरसात में यह अक्सर लकड़ी की चीजों को खा जाता है। दीमक गरम व खुश्क स्थानों पर नहीं रह सकते। वराहमिहिर ने दीपक(वल्मीक) वाली भूमि को जल प्राप्ति का एक चिन्ह माना है।

अकेले उदकार्गल अध्याय में वराहमिहिर ने कुल 86 प्रकार के वृक्षों का वर्ण किया है। अलग-अलग किस्म के वृक्षों को भूगर्भ जल-मापन से संकेत मानकर भूगर्भ से अलग-अलग पानी मिलने की गहराई बताई है। इतना ही नहीं, अलग-अलग प्रान्तों व प्रदेशों को अनूप (प्रचुर जल वाले क्षेत्र) जांगल (सामान्य जल वाले क्षेत्र) एवं मरु (न्यूनतम जल वाले क्षेत्र) इन तीनी भागों में विभाजित कर, वराहमिहिर ने जल-प्राप्ति की गहराई को भी स्पष्ट किया है। वृक्ष वर्षा से तथा भूमि के अन्दर विद्यमान नमी से अपने जल की खुराक पाते हैं। अगल-अलग किस्म वृक्षों की जड़ों का भूमि के अन्दर अलग-अलग ढंग से विस्तार होता है। उदकार्गल अध्याय में बराहमिहिर ने केवल जल ही नहीं, अपितु वनस्पति-शास्त्र के विलक्षण ज्ञाता होने का भी परिचय दिया है।

उदकार्गलाध्याय के 100वें श्लोक में बराहमिहिर ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात कहीं है कि जिस जगह जल की अधिकता हो उस भूमि पर स्थित वृक्ष की एक डाली नीचे की ओर झुक जाती है। चुम्बक की भाँति यह भी आकर्षण प्रभाव का प्रत्यक्ष उदाहरण है। इसके अन्य उदाहरण भी खोजे जा सकते है। हरे पतों वाली डालियाँ सूर्य के प्रकाश की ओर आकर्षित सर्वत्र दीख पड़ती है। भारी भरकम सूर्यमुखी का पुष्प नभमण्डल में सूर्य दिशा की ओर आकर्षित रहता है। जिधर सूर्य घूमता है उधर सूर्यमुखी का पुष्प भी घूम जाता है।

कमल पुष्प सूर्य किरण से खिलता है एवं कुमुद पुष्प रात्रि में चन्द्र-किरण से खिलता है। सोमलता चन्द्र-किरण से पुष्ट होती है इसका प्रमाण वेदों में है। पौधों में भी मनुष्यों की तरह प्राणों का संचार होता है। वे भी ग्रह-नक्षत्रों से प्रभावित होते हैं तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में बीमार भी होते हैं एवं उपचार करने पर ठीक भी होते हैं। पौधों, वृक्षों व लताओं में प्राण संचार की प्रक्रिया को नोबल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक डॉ.जगदीश चन्द्र बसु ने भी सार्वजनिक रूप से प्रमाणित किया है। उसकी इस पुष्टि से बराहमिहिर के अयोनिज अध्याय, वृक्षायुर्वेदाध्याय एवं उदकार्गलाध्याय की सत्यता व सार्थकता अधिक प्रामाणितकता के साथ मुखरित होती है। भूगर्भ के अदृश्य स्त्रोत की ओर वनस्पति का झुकना, सर्वप्रथम आचार्य बराहमिहिर ने लेखबद्ध किया है। प्रकृति की इस प्रवृत्ति के आधार पर लोक में प्रचलित 'झूलती लकड़ी के सहारे'' (Dousing) जल का आज भी पता लगाने का प्रयत्न होते दीख पड़ते हैं। भूगर्भ में पानी ढूंढने के लिये सयाने लोग एक 'जादुई छड़ी' के इस्तेमाल करते हैं। यह बेंत की पतली नुकीली छड़ी पानी हो वहां झुक जाती है। इस पर बहुत सा साहित्य लिखा गया एवं प्रयोग हुए। ये सभी वराहमिहिर की देन है। जहां भी पानी की खोज व जलविज्ञान की चर्चा होगी वहां वराहमिहिर जल विज्ञान के आदि पिता के रूप में स्मरण किये जाते रहेंगे। इसके लिए आप डॉ. जितेन्द्र व्यास की पुस्तकें भी देख सकतें हैं। [43, 44]

5. संदर्भ सूची

1. मनुस्मृति/अध्याय 1/श्लोक 47/पृष्ठ 7
2. भावप्रकाश/अध्याय 1/श्लोक 1/पृष्ठ 4
3. मेदनीकोष/पृष्ठ 216
4. बृहत्सहिंता, वृक्षायुर्वेदाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 1, पृष्ठ 27
5. बृहत्सहिंता, वृक्षायुर्वेदाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 3, पृष्ठ 55
6. बृहत्सहिंता, वृक्षायुर्वेदाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 6, पृष्ठ 376
7. बृहत्सहिंता, वृक्षायुर्वेदाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 31, पृष्ठ 380
8. बृहत्सहिंता, वृक्षायुर्वेदाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 7 व 8, पृष्ठ 376
9. बृहत्सहिंता, वृक्षायुर्वेदाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 9, पृष्ठ 377
10. बृहत्सहिंता, वृक्षायुर्वेदाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 10 व 11, पृष्ठ 377
11. बृहत्सहिंता, वृक्षायुर्वेदाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 12, पृष्ठ 377
12. बृहत्सहिंता, अध्याय 53, श्लोक 53, पृष्ठ 363
13. बृहत्सहिंता, वृक्षायुर्वेदाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 4 व 5, पृष्ठ 376
14. बृहत्सहिंता, वृक्षायुर्वेदाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 29, पृष्ठ 380
15. बृहत्सहिंता, वृक्षायुर्वेदाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 29, पृष्ठ 380
16. बृहत्सहिंता, वृक्षायुर्वेदाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 15, पृष्ठ 377
17. बृहत्सहिंता, वृक्षायुर्वेदाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 16, पृष्ठ 378
18. बृहत्सहिंता, वृक्षायुर्वेदाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 17 व 18, पृष्ठ 378
19. बृहत्सहिंता, वृक्षायुर्वेदाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 19 व 20, पृष्ठ 379
20. अमरकोष/ प्रथमकाण्डम्, पृष्ठ 106
21. बृहत्सहिंता, अध्याय 54, श्लोक 1, पृष्ठ 355
22. पानी की खोज, श्री हनुमन् ज्योतिष मन्दिर, कानपुर, प्रकाशन 1984, पृष्ठ 1
23. वाराही सहिंता, अध्याय 54, श्लोक 99
24. बृहत्सहिंता, दकार्गलाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 19 व 20, पृष्ठ 379
25. बृहत्सहिंता, दकार्गलाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 100 व 102, पृष्ठ 371
26. बृहत्सहिंता, दकार्गलाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 56, पृष्ठ 364
27. बृहत्सहिंता, दकार्गलाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 57, पृष्ठ 364
28. बृहत्सहिंता, दकार्गलाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 61, पृष्ठ 365
29. बृहत्सहिंता, दकार्गलाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 10, पृष्ठ 365
30. बृहत्सहिंता, दकार्गलाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 77, पृष्ठ 367
31. बृहत्सहिंता, दकार्गलाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 78, पृष्ठ 367
32. बृहत्सहिंता, दकार्गलाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 79 व 80, पृष्ठ 367
33. बृहत्सहिंता, दकार्गलाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 72 से 76, पृष्ठ 360 से 367
34. बृहत्सहिंता, अध्याय 54, श्लोक 94, पृष्ठ 370
35. बृहत्सहिंता, अध्याय 54, श्लोक 93, पृष्ठ 370
36. बृहत्सहिंता, दकार्गलाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 54, पृष्ठ 364
37. बृहत्सहिंता, दकार्गलाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 124, पृष्ठ 375
38. बृहत्सहिंता, दकार्गलाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 121, पृष्ठ 374
39. बृहत्सहिंता, दकार्गलाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 112 से 115, पृष्ठ 379
40. बृहत्सहिंता, दकार्गलाध्याय, अध्याय 54, श्लोक 98, पृष्ठ 370
41. वास्तु संदेश/प्रकाशन 1970/गोरू वास्तु प्लावर्स/हैदराबाद/पृष्ठ 140
42. ज्योतिष में भवन और कीर्तियोग/डायमण्ड प्रकाशन, दिल्ली/पृष्ठ 109
43. ज्योरिक-वेदांग ज्योतिष की प्रासंगिकता - डॉ. जितेन्द्र व्यास/रायल पब्लिकेशन, जोधपुर
44. भारतीय ग्रह विज्ञान और आधुनिक समस्याएं : कारण एवं निवारण - डॉ. जितेन्द्र व्यास/प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली